तुम धुर से चल कर आये

(सत्संदेश मई, क-भ्म से प्रकाशित प्रवचन)

(क) तुम धुर से चल कर आये।
अब ज़्यों ऐसी ढील लगाये॥
(ख) जल्दी से काज संवारो।
तुम ज़रा देर न धारो॥

फरमाते हैं ऐ सत्गुरु, आप निज घर से किस लिए यहां आये, हम जीवों के उद्धार के लिए। आप के आने की और कोई गर्ज़ नहीं थी कि हम दुनिया के जीव जो बहे चले जा रहे हैं किसी तरह बच जायें। सो पुकार कर रहे हैं कि ऐ सत्गुरु, मेरी पुकार सुनो, अब देर न करो, जल्दी से हमारा काज संवारो ताकि हमारा जन्म सफल हो जाये। हम जन्म मरण के चक्कर से निजात पा (छूट)जायें। यही पुकार है हमारी आप के आगे।

(फ) मैं आतुर तुज़्हें पुकारूं।
चित में कोई और न धारूं॥

अब फरमाते हैं कि अब शिष्य पुकारता है कि ऐ सत्गुरु, मैं अपने चिज़ में कोई और आस नहीं रखता, न रुपये पैसे की, न ऋद्धि-सिद्धि की, मेरे मन में दुनिया की कोई और ज़्वाहिश नहीं, मैं केवल मालिक से मिलना चाहता हूं। हजूर स्वामी जी महाराज साथ साथ सबक देते जाते हैं कि तालिब को ज़्या चाहिए कि वह ऐसा हृदय बनाये कि सिवाय मालिक के उस में कोई और ज़्वाहिश न रहे। अगर ऐसा हृदय ले कर पुकार करेगा मालिक के आगे तो उस की पुकार ज़रूर सुनी जायेगी। अब हमारी ज़्या हालत है ? हमारी ज़बान कुछ कहती है दिल कुछ और कहता है। जब हमारी ज़बान, मन बुद्धि एक हों, ज़बान जो कहे, दिल भी वही कहे, बुद्धि भी वही कहे तो हमारी प्रार्थना ज़रूर सुनी जायगी। ज़बान से तो यह कहता है कि मुझे मालिक मिले, दिल में दुनिया की तलब है। मान बड़ाई का ज़्याल है तो बात कैसे है ? माता उसी बच्चे को रोटी देगी जो भूखा है। जो बच्चा खिलौने में बहला हुआ है, वह उस से फारिग़ हो जाये तो फिर उसे रोटी मिलेगी। महात्मा तो देने आता है किन को ? जो उस चीज़ के ज़्वाहिशमंद हैं। यसू मसीह से किसी ने पूछा कि आप के काफी शिष्य हो गये हैं अब उन्हीं का ज़्याल करो। उन्होंने जवाब दिया I have yet many sheep to look after. जिस शिष्य के हृदय में सिवाय मालिक के और कोई ज़्वाहिश न हो उस की प्रार्थना ज़रूर कबूल होगी। प्रार्थना उसकी कबूल होती है जो हार थक के मालिक के दर पर गिर जाये। प्रार्थना से वे काम होते हैं जो वैसे ना-मुमकिन दिखाई देते हैं। प्रार्थना के लिए भी दो बातें ज़रूरी हैं। पहली बात यह कि जिस के आगे प्रार्थना की जाये वह समर्थ पुरुष हो, दूसरे भरोसा भी साथ हो। जिस की जेब में सिर्फ दो रुपए हैं उस से लाज़ रुपए मांगो तो कहां से देगा ? मेरी जेब में दस रुपये हों और तुम सौ रुपए मांगो तो मैं टाल मटोल ही करूंगा। साफगो (स्पष्टवादी) हूंगा तो कह दूंगा कि मेरे पास इतने रुपए नहीं हैं। अगर मान बड़ाई कायम रखने का सवाल होगा तो कह दूंगा कि मालिक करेगा तो हो जायेगा बंदोबस्त। सो पहली चीज़ यह है कि जिस के आगे प्रार्थना की जाये वह समर्थ पुरुष हो, फिर उस पर भरोसा भी हो। माफ करना हमें गुरु पर भी भरोसा नहीं। हजूर के बारे में भी कई एतराज़ करते थे कि इतना प्रपंच बना रखा है।

जवाब यह है कि उन के पास सब कुछ था मगर जैसी जैसी जिस की आंख है वैसा ही उसे दिखाई देते हैं। महात्मा को कोई कुराहिया (गुमराह) कहता है, किसी को वह रब रूप (प्रभु का रूप) दिखाई देता है।

श्री गुरु नानक साहब ने बारह बारह वर्ष की चार उदासियां लीं। घरबार छोड़ा, देश विदेश की यात्रा की, हम बारह दिन घर से बाहर नहीं रह सकते। ऐसों को दुनिया ने कुराहिया कहा, जब वह कसूर शहर पहुंचे तो उन्हें अंदर दाखिल नहीं

दिया कि यह कुराहिया है, लोगों की अकलें खराब करता है। उन्हें ज़्या गर्ज़ थी इतनी सिरदर्दी मोल लेते। वह परोपकार के लिए मुज़्त की सिरदर्दी मोल लेते हैं, जो दुनिया में बहे जा रहे हैं उन्हें बचाने के लिए आते हैं और दुनिया वालों की लानतें सहते हैं और अपना काम किए जाते हैं। देरी उन की तरफ से नहीं, हमारी तरफ है। कहते हैं कि हमें मालिक मिले मगर दिल साथ नहीं देता। सो स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि अगर मालिक को मिलने में, परमार्थ को हासिल करने में देरी नहीं चाहिए तो ज़्या करो? ऐसा हृदय बनाओ जिस में सिवाय मालिक के कोई दूसरी ज़्वाहिश न रहे। यह ज़बानी जमा खर्च की बात नहीं, अपने दिलों को टटोलो। अगर दिल में बाल बच्चे, धन, दौलत जायदाद की तलब है तो खाली ज़बान से मालिक को पुकारने से कुछ न बनेगा। अगर दिल में सिवाय मालिक के कोई दूसरी ज़्वाहिश नहीं तो वह ज़रूर मिलेगा। यसू मसीह कहते हैं Knock and the door shall be opened unto you, दरवाज़ा खटखटाओ, वह ज़रूर तुम पर खुलेगा। वह कौन सा दरवाज़ा है? वह दर कहां है जो पिंड से अंड ब्रह्मंड और उस के आगे पारब्रह्म को जाने का रास्ता है। यह वही दरवाज़ा है जिस के बारे में गुरबाणी में आया है।

अंधे दर की खबर न पाई॥

दो आंखों के पीछे वह दरवाज़ा है, दो भ्रूमध्य नासिका का अग्र भाग जैसा कि भगवान श्री कृष्ण ने गीता में इशारा दिया है। इस दरवाज़े पर बैठ कर मांगना है, जो मांगोगे मिलेगा।

पिता कृपाल आज्ञा एह कीनी बारिक मुख मांगे सो देना॥

दयाल पुरुष ने इकरार किया है कि उस का बालक, यह इंसान जो मांगेगा वह उसे मिलेगा। उस से ज़्या चीज़ मांगनी चाहिए:-

नानक दास एही सुख मांगे
हृदय बसे चरणा रे॥

उस से मांगे तो यह मांगे कि हे प्रभु मेरे हृदय में तेरे चरणों का निवास हो। सब से ऊंची मांग है यह मगर दिल से मांगे, खाली ज़बान से नहीं। कौन सी प्रार्थना मालिक की दरगाह में कबूल होती है? गुरवाणी बताती है:-

सत संतोख करे अरदास॥
तां सुण सद बहाले पास॥

हमारा हृदय नेक पाक होना चाहिए। उस में धोखा न हो, हम किसी और को नहीं, अपने आप को धोखा देते हैं। ऊपर से रब रब, गुरु गुरु कहते हैं, अंदर से नहीं कहते। हमारे दिल में दुनिया बस रही है, ज़बान पर परमात्मा का नाम है। लाहौर का वाकेया है, मुसलमानों ने मिल कर रातों रात मस्जिद बनाई। इकबाल ने इस पर एक शेयर कहा:-

मस्जिद तो बना ली शब भर में ईमां की हरारत वालों ने,
दिल अपना पुराना पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका।

बरसों गुज़र गये, मन मैखाना हुआ? खाली ज़बान से कहने से ज़्या होता है। सो पहली बात यह है कि ज़बान सत हो, रहनी सत हो, मन सत हो, आहार सत हो, जो दिल में हो वही ज़बान पर भी हो, फिर प्रार्थना कर के जल्दबाज़ी न करो। सच्चे दिल से पूरा समर्थ पुरुष समझ के विश्वास और भरोसा रख के उस के आगे प्रार्थना करो। फिर सब्र से इंतज़ार करो। अगर मालिक सच्चा समर्थ है तो महात्मा कहते हैं कि वह कीड़ी (चींटी) के पांवों की आहट को भी सुनता है, वह दिलों का राज़दां है। तुम ने अपना मामला उस के आगे पेश कर दिया अब वह जाने। बाज़ वक्त हम मांगते हैं और हमारी प्रार्थना कबूल हो जाती है मगर बाद में देखते हैं कि हमारी मर्ज़ी के खिलाफ होता तो अच्छा था। तो उस से वही मांगो जिस में तुज़्हारी बेहतरी हो। दिल से जो भी प्रार्थना करोगे वह कबूल होगी। कुरान में भी आया है कि खुदा से जो मांगो वह देगा। ज़्या यह कलाम झूठे हैं? नहीं यह कलाम झूठे नहीं, कसूर हमारा है। हमारे दिल में परमात्मा को पाने की सच्ची ज़्वाहिश नहीं है। रब का मिलना मुश्किल नहीं अगर सच्चा महात्मा मिल जाये :-

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केही विध आवे हाथ।
कहें कबीर तब पाइये जो भेदी लीजे साथ॥

इंद्रियों के घाट पर सारी उम्र साधन करता रहा तो ज़्या मिलेगा। इस के लिए किसी ऐसे अनुभवी पुरुष की ज़रूरत है जो मन इंद्रियों से ऊपर आ कर अपने आप को जान चुका है और प्रभु को पा चुका है। वह अपनी तवज्जो का उभार दे कर तुज्हें इंद्रियों से ऊपर ला कर प्रभु परिपूर्ण पावर से, नाम से जोड़ देगा। सो फरमाते हैं कि सच्चे दिल से उस के लिए प्रार्थना करो तो ज़रूर मिलेगा मगर कैसे ? जब कोई और ज़्वाहिश सिवाय उस के पाने की ज़्वाहिश के, दिल में न रहे। चुनांचे प्रार्थना करते हैं कि ऐ समर्थ पुरुष, मेरे दिल में उसी चीज़ की ज़्वाहिश है जो तू धुर घर से ले कर आया है। मौलाना रूम फरमाते हैं:-

हकीमम तबीबम ज़बगदाद रसीदयम
बसे ऐतां राज़गम बार खरीदम

कि हम बगदाद के रहने वाले हकीम हैं, इंसान को सब गमों और बीमारियों से हम निजात दिलाने वाले हैं।

मह पिंदार कि ईं नेज़ हलीला अस्त हलीला अस्त
ईं शेरा अ़का कब्र न फिरदौस कशीदयम

हम कि हरड़, बहेड़े, आंवले लेकर नहीं आये, हम वह चीज़ ले कर आये हैं कि मुर्दों को दो तो ज़िंदा हो जाएं। हम जन्नत (स्वर्ग) से अमृत कशीद कर के लाये हैं दुनिया में बांटने के लिए। आगे फरमाते हैं :-

हकीमाने तबीबम रज्स मुर्द न खाहेम
कि मापाक रवानेम न तमा पलीदयम

कि हम वह हकीम हैं जो किसी से उजरत और मुआवज़ा नहीं लेते, अपनी मज़दूरी नहीं तलब करते किसी से, कि हम पाक लोग हैं हम (पलीद) नापाक नहीं हैं तमा से। फरमाते हैं:-

तबीबाने खबीरयम कि फारदूरा नगीसदयम
कि मादरतनेतन रंजो खूं अंदेशा दविदयम

कि हम बा खबर हकीम हैं, हर चीज़ की खबर रखते हैं, हम नज़्ज देख कर व कारूरा देख कर मर्ज़ की तशखीस नहीं करते, हम नज़्ज के देखने वाले हकीम नहीं हैं। हमारी नज़र आदमी के हर रगो-रेशे में दौड़ जाती है। हजूर फरमाते थे कि जीव जब सामने आता है तो महात्मा उस के अंतर की हालत को इस तरह देख लेता है जैसे शीशे के मर्तबान में साफ नज़र आ जाता है कि इस में आचार पड़ा हुआ है कि मुरज़्बा मगर वह पर्दापोश होता है। सब कुछ देख कर भी वह किसी का पर्दाफाश नहीं करता। कई बार हजूर के पास जाते थे, वह एक आदमी से बात कर रहे हों तो दूसरा जो पास खड़ा होता अपनी जगह शर्म से ज़मीन में गड़ जाता था। उन का तरीका अजीब था, कभी सामने नहीं कहा, तरीके से, प्यार से, समझाते थे। यह उन्हीं का वस्फ था, वह लज़्बा रस्सा था, फरमाया करते थे कि मेरा रस्सा बड़ा लज़्बा है। मैं ढील छोड़ देता हूं, मैं देखता हूं कि बच्चा आज वापस आता है, कल वापस आता है। जब कोई चारा नहीं रहता तो रस्सा खींच लेता हूं। कई लोग कहते थे कि हम ज्यादा पाप कर के जाते हैं तो हजूर ज्यादा प्यार करते हैं। हम ने उन की नर्मी से फायदा उठाने की बजाय उलटा नुकसान कर लिया अपना।

सो फरमाते हैं हजूर स्वामी जी महाराज कि जब हमारे मन की यह अवस्था बन जाये कि एक को छोड़ कर किसी का ध्यान, किसी की चाह उस में न हो तो बेड़ा पार है। उस्ताद जब बच्चे को पढ़ाता है तो वह खुद भी अलिफ बे (A,B,C) से शुरु करता है। जब वह बच्चे से कहता है कहो अलिफ बे, स्वामी जी महाराज जब यह कहते हैं तो उस का मतलब यह नहीं कि वह नावाकिफ हैं, वह तो समझाते हैं, तरीका बताते हैं हमें प्रार्थना करने के लिए :-

(ब) मेरा जीवन मूर अधारा।
जस सीपी स्वांत निहारा॥

कहते हैं मेरा जीवन तुज्हारे आधार पर है, तुम मेरे जीवन आधार हो। जैसे सीपी

स्वांति बूंद की इंतज़ार में रहती है, उस का मोती बनता है उसी तरह मैं तुज़्हारी इंतज़ार में हूं मेरे दिल, जिसमें अब कोई ज़्वाहिश नहीं मालिक के सामने के सिवाय, हजूर स्वामी जी महाराज बता रहे हैं कि एक ही ज़्वाहिश ले कर गुरु के पास जाओ तो काम बन जाता है:-

(५) अब मुज़्ता नाम जपाओ।
मेरे जी की आस पुराओ।

कि महाराज मैं आप से दान मांगता हूं कि वह नाम जो मुक्ति देने वाला है मेरे अंतर में प्रज़्ट कर दो, बस यही दान आप से मांगता हूं। मेरे मन को यही आसा और लालसा है कि जो मुक्ता नाम है उस का बीज डाल दो। बीज से ही दरज़्त बनेगा। मुझ पर दया करो। गुरु नाम मुजस्सम होता है। इसी लिए कहा है:-

बिन सतगुर नाम न जापे॥

यह पुकार कर रहे हैं समर्थ पुरुष के आगे कि ऐ सत्गुरु, वह जो मुक्ति देने वाला नाम है उसे मेरे अंतर में प्रज़्ट कर दो। हम ने कई वर्ष हजूर के चरणों में गुज़ारे, यह पुकार नसीब न हुई। अगर पुकारते तो कई वर्ष पहले काम बना होता। वह समर्थ पुरुष थे और हैं, गुरु मरता नहीं, अब भी सच्चे मन से पुकारो तो काम बन जाये।

(६) मन सुरत अधर चढ़ाओ।
अब के मेरी खेप निबाहो॥

फरमाते हैं कि जन्मों जन्मों से जन्म मरण के चक्कर में आ रहा हूं। हमारी ज़्या गति है। सुरत हमारी मन के अधीन है, मन आगे इंद्रियों के अधीन है। सारी उम्र दुनिया में गलतान रहे, मर कर कहां जाते, जहां की आशा थी वहीं बार बार आते रहे। सो फरमाते हैं कि ऐ सत्गुरु, मेरी प्रार्थना सुन ले। मेरी सुरत को इंद्रियों के घाट से छुड़ा कर अंतर्मुख कर के अधर चढ़ाओ। यह हमारा स्थूल शरीर धर है। पहले इस से ऊपर आओ, फिर सूक्ष्म और कारण धर से ऊपर आओ। इस धर (matter) से पार करो हमें, यह प्रार्थना कर रहे हैं समर्थ पुरुष के आगे। फरमाते हैं यही एक ज़्वाहिश रह गई है मन में, इसे पूरा कर दो। अब का जन्म तुज़्हारे नमित है।

एह जन्म तुज़्हारे लेखे॥

यह बार बार जन्म लेना आसान तो नहीं। नौ महीने माता के पेट में उलटा लटकना पड़ता है, फिर आगे तरह तरह की मुसीबतें सहनी पड़ती हैं। अब प्रार्थना कर रहे हैं कि दूसरी बार जन्म में न आना पड़े। वह कैसे? कि हमारी सुरत को धर से ऊपर ले आओ। अगर जीते जी हमारी सुरत और मन दोनों इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उस का रस लेने लगें तो दुनिया के सारे रस अपने आप फीके पड़ जाते हैं।

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा॥

मन में कोई दुनियावी आस ही न रही तो फिर आना जाना कैसे होगा। सो फरमाते हैं कि ऐ सत्गुरु, आप की सोहबत ही से समझ में आया कि हमारा जन्म इस लिए बरबाद चला जा रहा है कि हमारी सुरत मन के अधीन है और मन इंद्रियों के रसों में, भोगों में गलतान है। याद रखो इंद्रियों के घाट से ऊपर आने का यह काम अपने आप नहीं हो सकता। गुरु दया कर के ऊपर लाये तो लाये वरना अपने आप तुम इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आ सकते।

खैंचे सुरत गुरु बलवान

हजूर फरमाते थे कि गुरु पर्देदार औरत की तरह है। उस ने बाहर आना नहीं लेकिन अगर बच्चा दरवाज़े पर आ जाये तो वह झट हाथ बढ़ा कर उसे अंदर खींच लेती है। वह बज़्शिश के दरवाज़े पर दोनों हाथों में दया मेहर लिये हमारा इंतज़ार कर रहा है और हम बाहर मारे मारे फिरते हैं, उस तरफ हमारा रुख ही नहीं।

(७) भवसागर वार न पारा।
डूबे सब उस की धारा॥

यह संसार सागर भय का समुद्र है, इस का सिरा नहीं मिलता न एक न दूसरा। कब से यह सिलसिला शुरु है, कब यह सिलसिला खत्म होगा, हमें मालूम नहीं। बस इस में बहे चले जा रहे हैं।

ऐ खुदा जोयां खुदा गुम करदई
गुम दरायम असवाज कुल़ुम कर्दा ई

कि ऐ खुदा को ढूंढने वालो, तुम ने खुदा को गुम कर दिया, कहां ? मन रूपी समुद्र की लहरों में:-

मन समुद्र लख न पड़े उठें लहर अपार ।
कोई ऐसा न मिला जिस संग उतरे पार ॥

सारी दुनिया इसी सागर में डूब रही है :-

(त) है मिथ्या झूठ पसारा ।
धोखे को सच सा धारा॥

यह सब धोखे का सामान है, सब मिथ्या है, सब सामान बदल जाने वाला है लेकिन सभी धोज़े में जा रहे हैं। जब अंत समय आता है तब आंख खुलती है:-

मिथ्या हौमे ममता माया॥

उस वक्त होश आता है, यह जिस्म और जिस्मानी ताल्लुकात सब मिथ्या हैं, सब बदल जाने वाले हैं मगर वह हमें मिथ्या नहीं दिखाई देते, हमें वह सत भास रहे हैं। यही धोखे का कारण है। सभी महात्मा कहते आ रहे हैं कि जगत असत है, नाम सत है मगर हमें इस से उलटा भास रहा है। हम समझते हैं कि यह जिस्म और जिस्मानी ताल्लुकात, यह बाल बच्चे, रिश्तेदारियां, यह धन दौलत, जायदादें हमेशा बनीं रहेंगी।

रत्न त्याग कोडी संग रचे॥
साच छोड़ झूठ संग मचे॥
जो छड्डणा सो थिर कर माने॥
जो होवण सो दूर पराने॥
छोड़ जाये तिस का संग करे॥
संग सहाई तिस परहरे॥

गधे को कितना ही नहलाओ, धुलाओ, साफ करो फिर मिट्टी में लोट लगायेगा। यह सत्संग सुनता है, महात्माओं की बाणियां पढ़ता है, लिखता है फिर भी मिट्टी में लोट पोट हो रहा है। ज़बान से तो कहता है कि दुनिया धोखा है लेकिन यह हकीकत दिल में नहीं बैठी।

एक फकीर किसी गांव में गया । इन लोगों के दिल में रहम होता है। उस ने गांव के लोगों को इकट्ठा कर के कहा कि फलां दिन फलां घड़ी इस किस्म की हवा चलेगी कि जिस को भी वह हवा लगी वह पागल हो जायेगा। इससे बचने का तरीका यह है कि कहीं छिप के बैठ जाना ताकि वह हवा न लगे। जब वह हवा चली तो कुछ लोगों ने फकीर की हिदायत पर अमल किया और वह किसी महफूज़ जगह छिप के बैठ गये। बाकियों ने परवाह न की। जिसे भी वह हवा लगी वह पागल हो गया। उन थोड़े से आदमियों को छोड़ कर बाकी सब पागल हो गये। जो दो चार आदमी हवा से बच रहे थे उन्होंने देखा कि सारा गांव पागल हो गया है। इधर पागलों ने उन चंद आदमियों को देखा तो कहने लगे कि यह लोग पागल हो गये हैं। सब महात्मा कहते चले आ रहे हैं कि यह दुनिया हमेशा रहने वाली जगह नहीं, एक दिन यह दुनिया सब को छोड़नी होगी। हमें यह हकीकत ज़हन नशीन नहीं होती:-

(-) सत्गुरु बिन धोख न जाई।
बिन शज़्द सुरत भरमाई ॥

जब तक सत्गुरु न मिले, ऐसी हस्ती जो मन इंद्रियों से आज़ाद हो कर सत का स्वरूप हो चुकी है, जिसे जाति तजरबा है अपने आप का और जो प्रभु में अभेद हो चुका है ऐसी हस्ती के पास बैठो तो दुनिया असत भासती है। जब वहां से उठो तो फिर दुनिया सत भासती है। उस के पास पूर्ण युक्ति है। वह हमें सामने बिठा कर अपनी तवज्जो का उभार दे कर जिस्म से ऊपर लाता है तो मालूम होता है कि यह संसार असत है और आत्मा सत है। जब तक ऐसा महात्मा न मिले इस चीज़ की सूझत ही नहीं होती हमें कि दुनिया असत है। पढ़े अनपढ़ सभी इस गलती में, इस भ्रम में बहे चले जा रहे हैं।

माया मोह सोए रहे अभागे॥
गुरुप्रसाद कोई विरला जागे॥

गुणी ज्ञानी, प्रचारक, कथाकार, उपदेशक सब इस भ्रम में बहे चले जा रहे हैं, लैक्चर देने वाले भी और लैक्चर सुनने वाले भी दोनों सोए हुए हैं।

खुज्ता रा खुज्ता के कुनद बेदार

सोया हुआ सोए हुए को कैसे जगा सकता है। जो आप इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आया वह दूसरे को कैसे इंद्रियों के घाट से ऊपर ला सकता है।

(क॰) या ते तुम शरणा ताकूं ।
सोवत मैं ज़्योंकर जागूं॥

अब फरमाते हैं कि ऐ सत्गुरु, मैंने देखा कि आप पूर्ण पुरुष हैं। सो मैं आप के चरणों में आया कि मुझ सोए हुए को जगाओ। महात्मा के बारे में कहा है:-

जागण मैं सोवण करे सोवण में जागे।

सो प्रार्थना करते हैं कि ऐ सत्गुरु आप दया कर के मुझ सोए हुए को जगाओ। वह ज़्या करता है ? वह हकीकत का अमली तजरबा कराता है जिससे यकीन हो जाता है। जैसे कोई सो जाये और सपने में कोई बात सुन रहा हो कि यह न करो वह न करो, फिर अगर जागने पर भी वही सूरत पेश आये तो उसे यकीन आ जायेगा कि यह सपना नहीं हकीकत है। इसी तरह इस वक्त भी जब हम इंद्रियों के घाट पर सोए हुए हैं यह सारे उपदेश हमें सपने के समान दिखाई देते हैं लेकिन इन पर अमल करो तो वह सामने आ जाता है। ऐसे पुरुष कमयाब (कम) ज़रूर हैं लेकिन नायाब नहीं। जब तक ऐसा पूर्ण पुरुष न मिले जीव का कल्याण नहीं।

(क्क) बिन मेहर जतन सब थाके।
मैं कर कर बहु बिध त्यागे॥

फरमाते हैं कि ऐ सत्गुरु, जब तक तू दया कर के थोड़ा तजरबा न कराये तब तक काम नहीं बनेगा। मैं तो अनेकों यत्न कर कर के हार गया भई। यत्न सारे इंद्रियों के घाट पर किए। नीचे छलांगें मारना बेकार है जब तक जो ऊपर गया है तुज़्हें ऊपर न खींचे।

खैंचे सुरत गुरु बलवान॥

जब तक वह अपनी तवज्जो का उभार दे कर पिंड से ऊपर न लाये हकीकत की सूझत नहीं मिलती। संतों का सौदा हमेशा नकद का है। जो उधार पर राज़ी हैं उन की अपनी मर्ज़ी। संतों के यहां तो नकद सौदा है, वहां उधार का काम नहीं। उन्होंने तो जीते जी मुक्ति को माना है, मरने के बाद मुक्ति को नहीं माना, न उस की हकीकत पर एतबार किया है।

मोयां होयां जे मुक्त दयोगे तां मुक्त ना जानूं कोयला॥

कहते है कि अगर मरने के बाद मुक्ति दोगे तो ऐसी मुक्ति की कीमत कोयले के बराबर भी नहीं हमारी निगाह में। हमारे हजूर फरमाते थे कि जो जीते जी अनपढ़ है वह मर के पंडित कैसे हो जायेगा।

(क्ख) बल पौरख मोर न चाले।
मैं पड़ी काल जंजाले ॥

अब कहते हैं कि महाराज मेरा ज़ोर नहीं चलता। यहां इंद्रियां इतनी प्रबल हैं कि मेरा वश नहीं चलता। मैं चाहता हूं मालिक से मिलना मगर काल negative power बहुत ज़ोरदार है, वह मुझ पर हावी है, मेरा अपना वश नहीं चलता।

(क्प) बिनती अब करूं बनाई।
तुम सत्गुर करो सहाई ॥

कहते हैं कि अब मैं हार कर तेरे आगे प्रार्थना कर रहा हूं कि ऐ सत्गुरु, तू दया कर मेरे हाल पर, मैं तेरे चरणों में आया हूं। अब आप अपने अपने दिलों को टटोल कर बताओ कि ऐसी प्रार्थना निकल सकती है हमारे दिल से। हजूर स्वामी जी महाराज ने यह नमूना बताया प्रार्थना का कि सिवाय एक मालिक के मिलने की

ज़्वाहिश के और कोई ज़्वाहिश मन में न रहे।

(क७) मैं दीन अधीन तुज्हारी।
तुम बिन अब कौन सज्हारी॥

कहते हैं मेरी यही प्रार्थना है आप के आगे, आप न सुनोगे तो कौन सुनेगा आप इसी गर्ज़ से दुनिया में आये कि जीवों का उद्धार हो, और कोई गर्ज़ नहीं आप के यहां संसार में आने की। इस लिए आप के आगे मेरी बेनती है, आप न सुनेंगे तो और कौन सुनेगा।

(क८) कुछ करो दिलासा मेरी।
भरमों की पड़ी अंधेरी ॥

कि महाराज हम बड़े भ्रम में पड़े हुए हैं। कभी ज़्याल आता है कि परमार्थ सब धोखा है, कइयों के पास हम गये। हमें कोई पहचान नहीं कि कौन सच्चा है कौन झूठा है, कहीं देखा कि सब रोटी पैदा करने का सामान है। परमार्थ के नाम पर कहीं कुछ देखा कहीं कुछ यही सचमुच। यह सब धोखा है या इस में कोई असलियत भी है ? लोग बड़े भाव से जाते हैं लेकिन जब देखते हैं कि ये तो हमारी तरह इंद्रियों के गुलाम हैं तो वे बद दिल हो जाते हैं, वे गुरु के नाम से मुतनज़्फर हो जाते हैं। एक मरतबा कोई शज़्स सत्संग में गया, वहां एक दुकानदार से मिला। उस ने कहा कि सत्संग सब झूठ है। वह शज़्स कहने लगा कि यह धर्म ग्रंथों की बाणियां तो सत्संग और महात्मा की महिमा बखान कर रही हैं। उस ने कहा कि यह बाणियां भी सब झूठी हैं और महात्मा भी सब झूठे हैं। वह शज़्स आया सत्संग में तो उस का ज़्याल पलट गया। फिर वह हर वक्त तारीफ करता उस तालीम की जो उसे सत्संग में मिली। सच पूछो तो जब तक आमिल न मिले हमें न परमात्मा का विश्वास होता है, न ग्रंथ पोथियों का यकीन होता है। जब तक कोई अनुभवी न मिले और वह तजरबा न कराये, यकीन नहीं बनता। संतों की यही तालीम है:-

जब लग न देखूं अपनी नैनी।
तब लग न पतीजूं गुर की बैनी।

संतों की बड़ी आज़ाद तालीम है। वे किसी को अंध विश्वास में नहीं बांधते, वे तो कहते हैं कि जब तक तुम अपनी आंख से हकीकत को न देख लो गुरु के कहने पर भी पूरा विश्वास न करो। महात्मा मिले, थोड़ा तजरबा करा दे हकीकत का तब तो यकीन हो जाता है वरना यकीन कहां बनता है। ऐसे अनुभवी महात्मा आज कमयाब हैं। इस लिए लोगों में विश्वास नहीं रहा, हमारी हालत यह है कि आज एक महात्मा हमारे लिए अच्छा है कल कोई दूसरा महात्मा, फिर कोई तीसरा महात्मा। गुरु भी पूरा हो और शिष्य को भी उस की समर्था पर पूरा विश्वास हो तब काम बनता है मगर लोग भी सचे हैं दूध का जला छाछ को भी भी फूंक मार कर पीता है।

(क९) प्रकाश करो घट भाना ।
मिटे भ्रम तिमर अज्ञाना।

बड़ी साफगोई है, कहते हैं कि मैं तो चाहता हूं कि आंख बंद करूं तो अंतर में प्रकाश हो जाये तब मेरी तसल्ली होगी। ज़्याली बातों से मेरी तसल्ली नहीं हो सकती। अगर हर चीज़ आप के पास है तो ठीक है वरना कहीं और जाऊं। पूरे गुरु का काम भी यही है :-

गुरु ज्ञान अंजन सच नेतरी पाया॥
अंतर चानण अज्ञान अंधेर गंवाया॥

आज आमिल लोगों की कमी के सबब यह चीज़ कहीं मिल नहीं रही। उपदेश देने वाले प्रचारक तो बहुत मिलते हैं मगर हकीकत का तजरबा देने वाला कहां मिलता है। यह सारे धर्म ग्रंथ ऐसे ही अनुभवी महात्माओं की तारीफ कर रहे हैं, so called महात्माओं की नहीं जिन के कारण सब भ्रमों में जा रहे हैं। अनुभवी महात्मा कोई खास शज़्ल या वेष नहीं रखता, न वह शरीयतों की बाहरी झगड़ों में उलझता है। वह कहता है कि जिस समाज में तुम पैदा हुए हो वह समाज मुबारिक, अपनी

अपनी जगह पर रहो, अपनी अपनी समाजों के नियम पालन करो मगर दुनिया के सारे काम करते हुए अपना काम कर लो, किसी आमिल पुरुष से हिदायत ले कर चलो अंतर। मेरे पास एक शज़्स आया हर जगह से रिजैज़्ट (reject) हो कर। वह जहां भी गया उसे वापस कर दिया गया कि तुम अधिकारी नहीं हो। वह मेरे पास आया, कहने लगा कि मेरे अंदर ज़बरदस्त ज़्वाहिश है परमार्थ को पाने की मगर सब ने रिजैज़्ट कर दिया है मुझे। ज़्या आप मुझे नाम देंगे। मैंने कहा कि तुम अधिकारी हो ज़्योंकि तुज़्हारे अंदर ज़बरदस्त ज़्वाहिश है। जब उसे ध्यान पर बैठाया तो वह सब से अव्वल निकला।

सो कहते हैं कि मेरे अंतर में प्रकाश कर दो। पूरे गुरु के पास जा कर भी तजरबा न हुआ तो फिर कब होगा। पिंड से ऊपर आना खाला जी का घर नहीं। योगियों ने हज़ारों साल लगाये, हड्डियों का ढेर हो गये फिर भी पिंड से ऊपर आ न सके। कोई समर्थ पुरुष ही तवज्जो का उभार दे कर सुरत को पिंड से ऊपर ला सकता है।

खैंचे सुरत गुरु बलवान

सो फरमाते हैं कि हम जायें तो कहां जायें, सब जगह भ्रम है। हर तरफ से हार कर आप के दर पर आये हैं कि हकीकत का थोड़ा तजरबा करा दो हमें। किसी का कहना मत मानो, ग्रंथों पोथियों की गवाही ले लो समझने की खातिर, जो उस के मुताबिक तजरबा करा दे वह ठीक। जो न करा सके वह गलत, झगड़ा खत्म।

(क्ख) तुम तज अब किस पे जाऊं।
मैं कह कह तुज़्हें सुनाऊं॥

कि महाराज हम ने बड़ी टक्करें मारीं बड़ी बड़ी जगह गये पर किसी ने हमारी बात न सुनी। किसे सुनाऊं कोई सुनने वाला नहीं। ज्यादा पीछे पड़ो तो कोई बदनाम करा के निकलवा देगा कोई पिटवा देगा। समर्थ पुरुष पास बैठाकर हकीकत का तजरबा करायेगा। मेरे पास अब तक जो भी भाई आये हजूर की कृपा से उन को तजरबा मिला। यह जो लोगों को परमार्थ का फैज़ मिल रहा है यह सब उन की (हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) की दया है, आगे भी वही दया करेंगे।

मैं लाहौर में था, उन दिनों की बात है। खलीफा नेमत राए ने एक रोज़ बताया, कोई महात्मा आये हैं जो धुरधाम तक पहुंचे हुए हैं। हम वहां गये, मैंने उन के आगे हाथ जोड़े, वह बोले ज़्या चाहते हो? मैंने कहा ग्रंथ पोथियों में तो बहुत कुछ पढ़ा है, कोई जाति तजरबा बताइए परमार्थ का। आमिल और आलिम में बड़ा फर्क है उसने देखा, मैं तो पकड़ा गया। अब बोला तुम अधिकारी नहीं हो। ठीक है, ऐसों के पास ज़्या मिलेगा। ऐसे पुरुषों की सोहबत में जाओ जहां हर शज़्स को जिस के मन में ज़्वाहिश है जाने का अधिकार हासिल है। बड़े बड़े मठों में जाकर यह सवाल करो कि महाराज हमें जाति तजरबा दो, वे यह बात सुनने के भी रवादार नहीं। यह साफगोई, सच इस लिए कहना पड़ता है कि आज हजूर का भंडारा है। हजूर समर्थ पुरुष थे और हैं। वह कहीं गए नहीं, अब भी हमारे अंग संग सहाई हैं। इसी लिए पुराने भाइयों से मैं कहता हूं कि हजूर जैसे समर्थ पुरुष से नाम ले कर इतना डांवाडोल ज़्यों हो। उन पर भरोसा रखो, सब से प्यार रखो, किसी से भी नफरत न करो, सत और अहिंसा का पालन करो, सदाचार की ज़मीन बनाओ। अगर अज़्यास में कोई गलती है तो किसी आमिल भाई के पास बैठ कर वह गलती ठीक करा लो।

सो प्रार्थना कर रहे हैं कि तुज़्हारे सिवाय और कोई सुनने वाला भी नहीं। तुम सुनते तो हो इस लिए बार बार तुज़्हारे आगे प्रार्थना करता हूं कि मेरे मन में सिवाय मालिक के मिलने के और कोई आसा नहीं।

(क्त) जब चाहो तब ही देना।
तुम बिन मोहे किस से लेना॥

मैं यह नहीं कहता कि अभी कर दो मेरा काम आज, कल सही। और देने वाला कौन है तुज़्हारे सिवा तुम समर्थ पुरुष हो, तुम आए ही इसलिए हो जीवों के उधार के लिए, हमें दिलासा तो दो, कहो मालिक दया करेगा। इतना कहने वाला भी नहीं मिलता। शिष्य के हिदायत नामे में लिखा है कि शिष्य जब गुरु के पास आये तो

उसे जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए मगर गुरु के दर पर कोई आये और गुरु जल्दी करे तो उस के लिए कोई बंदिश नहीं।

हजूर हमारे गांव तशरीफ लाए और वहां सत्संग किया। एक शज़्स भरी संगत में खड़ा हो गया और कहने लगा कि महाराज आप अधिकारियों को जो नाम देते हैं वह तो ठीक है मगर जो अधिकारी नहीं हैं वे भी आजज़ी से अर्ज़ करें तो आप उन्हें नाम दे देते हैं। हजूर ने फरमाया कि भई अधिकारी होने की बात करो तो अधिकारी तो मैं भी नहीं। नम्रता संतों का श्रृंगार है। फिर फरमाया कि एक दौलतमंद अगर अपनी दौलत लुटाता है तो हमें ज़्या एतराज़ है ? देने वाला एक हो, लाखों हों, उन का आपस में कोई झगड़ा नहीं। झगड़ा हो सकता है तो लेने वालों में हो सकता है कि कहीं माल कम न पड़ जाये, देने वालों में तो सब में आपस में प्यार होगा। हमारी गर्ज़ तो रब की याद से है। रब की याद कराने वाले सब आपस में भाई हैं। तुम भी याद कराओ, हम भी उस प्रभु प्रेम को याद करायें। परमात्मा को याद कराने वालों में आपस में ईर्षा ज़्यों ? अगर उन की आपस में ईर्षा है तो समझो कि वहां रब की याद नहीं, ज़रूर कोई गड़बड़ है वहां, बड़ी साफगोई है। खुद ही विचार के देख लो।

(क–) मैं द्वारे पड़ी तुज़्हारे।
धीरज धर रहूं सज़्हारे॥

फरमाते हैं कि हम अब तुज़्हारे दरवाजे पर आ गये। अब आप हमें धीरज दो, हम आप पर भरोसा रख के दर पर बैठे हैं। दुनिया आप से ही है। मेरे दिल के अंदर झांक के देख लो कि मैं मालिक से मिलने के सिवाय कोई और चीज़ नहीं मांगता। आप सुन रहे हो और तो कोई सुनता ही नहीं।

(ख) मन आतुर दुख न सहारे।
उठ बारज़्बार पुकारे॥

कहते हैं मेरा मन अब और इंतज़ार की ताब नहीं ला सकता है। बस आतुर हो होकर यही पुकार रहा हूं। मैं बड़ा दुखी हूं, मैं इंद्रियों के घाट पर दुनिया में गलतान हो कर बार बार जन्मता मरता रहा। अब आतुर हो कर तुज़्हें पुकारता हूं, मुझ पर दया करो ताकि मैं इस जन्म मरण के बंधन से निजात (छुटकारा) पा सकूं।

(ख्क) मैं शरण दयाल तुज़्हारी।
कर जल्दी लो निस्तारी॥

ऐ दयाल पुरुष, मैं तुज़्हारी शरण में आया हूं, जैसे भी बने मुझे भवसागर से निकाल लो, तुज़्हारे सिवाय और कोई नहीं मेरे लिए। हजूर फरमाते थे कि किसी अमीर के दरवाजे पर कोई बैठा हो तो उसे पता होता है कि कोई आदमी मेरे दरवाज़े पर बैठा है। जो मालिक के दर पर आ गया तो ज़्या उसे पता नहीं होगा कि मेरे दरवाजे पर कोई बैठा है। उस के दर पर बैठो सही सब तरफ से हट हटाकर, हार कर उस के दरवाज़े पर बैठो। न शरीर की सुधि रहे न दुनिया की, इस तरह सब तरफ से हट हटा कर उस के दरवाज़े पर बैठोगे तो वह खींचेगा ज़रूर खींचेगा, यह उस का बिरद है।

(ख्ख) घर तुमरे कमी न कोई।
कहीं भाग ओछ मेरा होई॥

कि ऐ सत्गुरु, तेरे दर पर कई आए और नशा पी गये, रूहानियत की लाज़वाब दौलत को पा गये। शायद मेरे भाग्य खोटे थे ,मेरे भाग्य में कमी थी कि मैं अब तक इस दौलत से खाली रहा। अब हार कर तेरे दर पर आ गया हूं। जैसे औरों को तूने निहाल किया, जैसे उन का दामन भर दिया है तू मेरी भी झोली भर दे।

(ख्ग) यह भी सब तुमरे हाथा।
तुम चाहो करो सनाथा॥

अब फरमाते हैं कि यह जो कुछ भी मैं कह रहा हूं यह भी आप की सोहबत संगत का असर है, दर्दे दिल कहां मानता है। दिल तो दुनिया मांगता है। यह आप ही की सोहबत का असर है जो यह बातें कहलवा रहे हो मुझ से, जो मेरे हृदय से पुकार उठ रही है यह आप की सोहबत का फैज़ है।

(ख७) अब कहां लग करूं पुकारी।
मैं हार हार अब हारी॥

कहते हैं कि मैं कितनी देर से पुकार रहा हूं, मैं हार के तेरे दर पर पड़ गया हूं, हर तरफ से हट हटा के तेरे दरवाज़े पर बैठ गया हूं। यह वह दरवाजा है दो आंखों के पीछे, यह वह दर है जहां सत्गुरु दोनों हाथों में दया मेहर लिए खड़ा है, वह इंतज़ार कर रहा है कि कब मेरे बच्चे मेरे पास आते हैं। हजूर फरमाते हैं कि गुरु पर्देदार औरत की तरह है जिस ने बाहर निकलना नहीं। बच्चा दरवाजे पर आ जाए तो वह झट उसे अंदर खींच लेती है लेकिन वह बाहर भटकता रहे तो खसमां नूं खाये, यह लफ़्ज़ थे हजूर के। सो फरमाते हैं हजूर स्वामी जी महाराज कि मैं तेरे दर पर आन पड़ा हूं अब दया करके मुझे संसार सागर से निकाल ले।

(ख८) तुम दाता दीन दयाला।
राधास्वामी करो निहाला॥

स्वामी स्वामी कर के उस कुल मालिक को सभी महात्मा बयान करते आ रहे हैं।

सब की आद कहूं अब स्वामी।
ऊच अपार बेअंत स्वामी॥
कोट ब्रह्मंड को ठाकर स्वामी॥

हजूर स्वामी जी महाराज ने स्वामी के आगे राधा का लफ़्ज़ जोड़ दिया, इस लफ़्ज़ का इज़ाफा किया जिस का मतलब है 'सुरत का स्वामी'। यह लफ़्ज़ कुल मालिक के लिए भी बरता है और मालिक कुल जिस इंसानी पोल पर बैठ कर काम करता है यानी सत्गुरु के लिए भी यही लफ़्ज़ बरता है तो फरमाते हैं तू दयाल पुरुष है, तू समर्थ है मेरी झोली भर दे। जो ज़्वाहिश ले कर तेरे दर पर आया हूं वह ज़्वाहिश पूरी कर दे। उस के दर पर बैठने का सवाल है। उस के दर पर हार के बैठ जाओ, ज़रूर रहमत होगी। दुनियादार के दर पर बैठो तो उसे खबर होती है, ज्या उस अंर्तयामी समर्थ पुरुष को खबर नहीं होगी।

द्वारे धनी के पड़ रहो, धक्के धनी के खाय।
कभी तो धनी निवाजई जो दर छोड़ न जाय॥

यह तो खाली लफ़्ज़ हैं हमारे, वह हमारे भाव को भी जानता है। जो हम अब सोच रहे है उसे भी जानता है और आगे ज़्या ज़्याल आने वाला है दिल में, उसे भी वह जानता है। उस के आगे सच्चे दिल से पुकार की जाये तो वह सुनता है, वह देखता है हमारी आत्मा को भी।

(ख९) मैं आरत कीन अधारी।
तुम राधास्वामी सब पर भारी॥

अब कहते हैं तुम सर्व समर्थ हो तुज़्हारी ज़बरदस्त ताकत है। स्विच के पीछे पावन हाऊस की ताकत होती है। जो स्विच के पास पहुंच गया समझो वह पावर हाऊस के पास पहुंच गया। तो कहते हैं कि ऐ सत्गुरु, तुम सब पर भारी हो, सब कुछ कर सकते हो। इस लिए समर्थ पुरुष समझ कर मैं तुज़्हारे दर पर आया हूं, मेरे हाल पर दया करो। मालिक के मिलने की ज़्वाहिश के सिवाय और कोई ज़्वाहिश मेरे मन में नहीं। यह प्रार्थना है जो आज के दिन हम समर्थ पुरुष के दर पर बैठ कर कर सकते हैं। यह प्रार्थना कैसे करें ? इस के लिए पहली चीज़ है पूर्ण पुरुष की समर्था पर पूरा विश्वास, इस ओर भरोसा। दूसरी चीज़ है सच्चे दिल से प्रार्थना करो, जो बात ज़बान पर है वही दिल में भी हो, अपने आप को उस के हवाले कर दो। बच्चे के लिए ज़्या चीज़ अच्छी है, बच्चे की बेहतरी किस चीज़ में है, यह माता पिता बेहतर जानते हैं। इसी तरह समर्थ पुरुष हम से बेहतर हमारी बेहतरी को समझता और जानता है। सो प्रार्थना करो समर्थ पुरुष के आगे कि ऐ सत्गुर, जिस राह पर आप ने हमें चलाया था हम उसे भूल गए हैं, हमें क्षमा करो। उन्होंने ऐसा आसान रास्ता बताया कि न घरबार छोड़ना पड़ा, न कोई और झंझट करना पड़ा। जिसे हजूर ने नाम दिया उस के जिज़्मेदार वह हैं, हजूर का दर छोड़ के उन्हें कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं। पुराने भाइयों को चाहिए कि वे हजूर का प्रेम प्यार और भरोसा रखें। उनके लिए और कोई दर नहीं, वे हजूर से जुड़े रहें। अज़्यास में कोई अमली तकलीफ या

गलती हो तो आमिल भाई के पास बैठ कर उसे ठीक करा लो। नये भाई यह सवाल लेकर जायें और तलाश करें और जहां से यह दौलत मिलती है जाकर ले लें।

किसी का बुरा चितवन न करो, मालिक एक है, सब उस एक मालिक के बच्चे हैं और इस नाते आपस में हम भाई भाई हैं। हमें चाहिए कि हम सब मनुष्य जाति को कुल मालिक के बच्चे समझ कर सब से प्यार रखें, किसी से नफरत न करें। किसी का दिल न दुखाओ यह बड़ा आदर्श है संतों का।

जब ते साध संगत मोहे पाई॥
बिसर गई सब तात पराई॥
सगल संग हमरी बन आई॥

और इसके साथ जो एक गुरु के नाम लेवा हैं, उन का खास तौर पर आपस में प्यार होना चाहिए।

सच्चा साक न तुट्टई गुर मेले सइयां॥

यह परिवार अब भी है, मर के भी रहेगा। अब गुरु भाई और नहीं बनेंगे, इस लिए हमारा आपस में प्यार होना चाहिए। एक गुरु की याद में बैठने वालों का आपस में दिली प्यार होना चाहिए। स्त्री का पति एक होता है, यह पतिव्रत धर्म है। शिष्य का भी एक गुरु होता है, यह गुरसिख का धर्म है। जिन को हजूर ने नाम दिया उन के सरताज वही हैं। आमिल भाई को बड़ा भाई समझ लो। वह तुम्हें तुम्हारे गुरु से जोड़ेगा, वह अपने से नहीं जोड़ेगा। किसी का बुरा चितवन न करो, किसी के प्रति दिल में नफरत न रखो। इस से तुम्हारा अपना चित स्थिर होगा।

जिस के अंतर तात पराई,
बस कदे न होवे भला।
जब लग धारे बैरी मीत॥
तब लग निहचल नाहीं चीत॥

समर्थ गुरु जिन्हें मिल चुका है उन्हें क्या मुसीबत पड़ी है जो इधर उधर मारे मारे फिरते रहेंगे। जो गुरु का प्यार उन के हृदय में बसाये, गुरु की याद दिलाये वह सच्चा दोस्त है उन का। जो गुरु से तोड़े और अपने साथ लगाये वह उन का दुश्मन है। संतों का आदर्श यह है कि सब से प्यार करो। मसीह से किसी ने सवाल पूछा तो उन्होंने फरमाया, love thy neighbour. फिर फरमाया, love thy enemy. सो गुरु – भाइयों और बहनों की सेवा में यही अर्ज़ करूंगा कि सब से प्यार रखो और जो तालीम हजूर ने दी है उस फूल चढ़ाओ। जो सबक उन्होंने दिया उसे रोज़ रोज़ ताज़ा करो ताकि तुम्हारे गुरु का नाम रोशन हो।

मंदा कुज्ञा खसम नूं गाल।

सो सब से प्यार से रहो, निंदा, चुगली, धड़ेबंदी, बखीली से बचो। पुराने भाई जिन्हें समर्थ पुरुष से नाम मिला है उन्हें क्या मुसीबत पड़ी है। जो नये हैं उन्हें यह तशवीश होनी चाहिए। हर शख़्स दो रोटी खाता है, अब ज़माने बदल गये हैं। नये भाइयों को नया दूल्हा मुबारिक। पुराने भाइयों को चाहिए कि भाई के नाते आपस में प्रेम प्यार से रहो। अगर कोई बुरा भला भी कहे तो उस से भी प्यार करो। जो काम हजूर ने बताया था उसे करो। तुम्हारी जगह उन के चरणों के सिवाय और कोई नहीं। लोग मृत्यु पाठ और यज्ञ वगैरा पैसे देकर पंडितों से करा लेते हैं। यह पाठ तो आप ही करना पड़ेगा। रोज़ रोज़ अभ्यास करो। आज के दिन में चंद बातें अर्ज़ करूंगा उन पर अमल करने में सब का फायदा है, नये भाइयों का भी और पुरानों का भी। पहली बात जो परमार्थ में कामयाबी के लिए ज़रूरी है वह है सुबह उठने की आदत, ब्रह्म मुहूर्त में तीन और चार बजे के दरमियान उठ खड़े हो। या फिर सारी रात जागो। सुबह उठ कर नहाओ धोओ, चेतन होकर बैठो। हजूर ने जो काम बख़्शा है करने के लिए, वह काम करो। नाम को ध्याओ, पिंड से ऊपर अंड में और अंड से ऊपर आकर अमृतसर में नहाओ। यह सिख का प्रोग्राम है:–

गुर सत्गुर का जो सिख अखाये॥
सो भलके उठ हर नाम ध्याये॥

उधम करे भलके प्रभाती॥
अशनान करे अमृतसर नहाये॥

हम ज़्या करते हैं ? गप्पबाज़ी में, दोस्तों यारों की महफिल में वक्त ज़ाया कर देते हैं। रात के बारह बजे सोते हैं सुबह आंख कैसे खुले। दूसरी बात यह है कि यह जिस्म घोड़ा है, उस को खुराक दो मगर इतनी कि सेहत बनी रहे, इतनी नहीं कि खुमारी पैदा हो। कम खाओ, थोड़ी वर्जिश भी करो। इंसान खाने के लिए पैदा नहीं हुआ, खाना इंसान के लिए पैदा हुआ है।

घट वसे चरणारविंद रसना जपे गोपाल॥
नानक तिस ही कारणे इस देही को पाल॥

दिन को कृत करो, हक हलाल की रोज़ी पैदा करो। देह को पालो, बाल बच्चों को पालो। थोड़ा बहुत भूखे प्यासों को दो, नेक रास्ते में खर्च करो, इस से मन साफ होगा। साथ साथ सुबह का वक्त भजन सिमरण में और थोड़ा वक्त धर्म पुस्तकों के स्वाध्याय में लगाओ। सब महात्माओं की बाणियां आज़ाद राय से पढ़ो और उन पर विचार करो, उन में सब में एक ही बात मिलेगी। मालिक के साथ महात्माओं को जो जाति अनुभव हुए उन का ज़्यान मिलेगा। इन पुस्तकों को पढ़ने से शौक़ बढ़ेगा उस तरफ। तंगदिली और तास्सुब के बगैर धर्म पुस्तकों का मुताल्या (स्वाध्याय) करोगे तो सब महात्माओं के लिए दिल में इज़्ज़त बढ़ेगी और मुखतलिफ समाजों से ताल्लुक रखने वाले लोग अपने भाई जचेंगे। उस से आगे बड़ी ज़रूरी चीज़ है ब्रह्मचर्य कायम रखना, ज़्याल में भी मन अपवित्र न हो। जो लोग शादी शुदा हैं उन्हें शास्त्र मर्यादा के अनुसार सादा जीवन बनाना चाहिए, गृहस्थ आश्रम विषय विकार के लिए नहीं। इस मैं एक फर्ज़ औलाद पैदा करना भी है मगर शास्त्र मर्यादा के अनुसार गृहस्थ का जीवन बसर करना चाहिए। ज़्या अच्छा हो अगर आज के दिन सीने पर हाथ रख कर प्रण करो छः महीने या साल भर के लिए ब्रह्मचर्य पालन करने का। इस से जिस्म को पुष्टि मिलेगी, दिल व दिमाग़ को पुष्टि मिलेगी। लोग कहते हैं कि भजन सिमरण नहीं बनता, हमारा जीवन गंदा है, Chastity is life sexuality is death अर्थात पवित्रता ज़िंदगी है और वीर्य का पात करना मौत है। यह बातें जो मैं कह रहा हूं आप सब के काम आने वाली हैं। ब्रह्मचर्य एक ऐसा गुण है जिस के बिना हज़ारों गुण असफल हो जाते हैं। जिस का शील नहीं उस के सारे गुणों पर पानी फिर जाता है। आप के पास बहू बेटियों ने आना है, शरीफों ने आना है। अगर ज़्याल ही अपिवत्र होगा तो कौन एतबार करेगा आप पर। इंसान सुबह से शाम तक कई गलतियां करता है, उस के लिए डायरी रखो। रोज़ रोज़ अपने जीवन की पड़ताल करो। इस के लिए मोटे असूल हैं कि सत और अहिंसा को धारण करो, किसी का बुरा चितवन न करो, न निंदा करो न चुगली करो, न धड़ेबंदी में पड़ो। सत को धारण करो। झूठ, रियाकारी, कपट, चोरी, किसी का हक मारना, इन सब से बचो। ज़्याल में पवित्रता हो, ज़बान से भी ज़हर न उगलो, गृहस्थ आश्रम की मर्यादा का पालन करो और नम्रता धारण करो। दौलत या हकूमत या इल्मियत का अहंकार कर के लोगों के नुज़्स न निकालो। हर एक की सुनो, हो सकता है कि नादान भी पते की बात कहता हो और इसके साथ साथ निष्काम सेवा तन कर के करना तुज़्हारा फर्ज़ है। मैं डेरे में था, वहां सेवा हो रही थी, मैंने भी टोकरी उठा ली। लोग कहने लगे यह तुज़्हारा काम नहीं। मैंने कहा मैं जिस्म भी रखता हूं। सेवा से मन साफ होगा। रोज़ रोज़ पड़ताल करो जीवन की। नोट करो कि आज ज़्या ज़्या किया, कितना भजन किया। कम अज़ कम दो घंटे सुबह और दो घंटे शाम भजन सिमरण में लगाओ, यह कम से कम वक्त है, इस से ज्यादा जितना चाहो वक्त बढ़ा लो। ज़िंदगी के कुछ नियम बना लो, हमारे घरों में नियम नहीं रहा कोई। घर में सब मिल बैठो और भजन करो, फिर रोटी खाओ। जब तक भजन न कर लो रोटी न खाओ। पहले ज़माने में मर्यादा होती थी घरों में, अब मर्यादा ही उड़ गई। हजूर स्वामी जी महाराज अपने बच्चों को रोटी नहीं देते थे जब तक वह जप जी का पाठ न कर लें । सो मालिक की याद में बैठो, अपने जीवन की रोज़ पड़ताल करो। जो गलती आज की है वह कल न करो। चुन चुन कर अपने अवगुण निकालते जाओ। हजूर फरमाते थे कि वह ताकत अभुल्ल है, जब तक फिट न देखे अंतर रास्ता नहीं देती। दया मेहर से जो तजरबा उन्होंने दिया, उसे अज़्यास कर के और बढ़ाओ मगर उस के लिए जीवन की पवित्रता ज़रूरी है।

साध नाम निर्मल जां के कर्म॥

मैंने एक बार अर्ज़ किया था कि जिस मकान में सब मिल कर भजन में बैठें, वह मकान मेरे मंदिर होंगे। सिवाय दो चार भाइयों के और किसी ने इस बात अमल करने की ज़रूरत नहीं महसूस की। हमारे घर भूतों के डेरे बने पड़े हैं। ईर्षा, द्वेष, लड़ाई झगड़ा, रोटी पकाते हुए भी गाली गलौच सुनाई देता है। यह बातें जो मैं कह रहा हूं उन्हें नोट कर लो, इस में आप का भला है। रूहानियत की ईमारत जो आप बनाना चाहते हैं उस के चार स्तून हैं अहिंसा, सत को धारण करना, ब्रह्मचर्य और सदाचार। हमारी ज़बान मीठी होनी चाहिए, मुहज़्बत भरे लफ़्ज़ ज़बान से निकलने चाहिएं। मन में नम्रता होनी चाहिए। सब शरीयतों की गर्ज़ सदाचार है। जिस ईमारत के ये चार स्तून कायम हैं रूहानियत की वह इमारत कभी न गिरेगी। ऐसा जीवन बनाने के लिए कुछ न कुछ साधन करना पड़ता है। इस के साथ साथ भजन सिमरण करो, सत्गुरु को बाकायदा रिपोर्ट दो। आप कहेंगे कि पापों से कैसे बचें ? मैं चाहता हूं कि आज के दिन आप को वे तजरबे दिये जायें जिन से पापों से बचने के लिए आप को मदद मिले। इस के लिए पहली बात यह है कि कोई काम छिप के न करो। जिस काम के करने के लिए दरवाज़े बंद करने पड़ें और लोगों की नज़रों से छिपना पड़े, समझो वह पाप है। और कोई ऐसा काम न करो जिस के लिए बाद में झूठ बोलना पड़े, यह criterion (कसौटी) है पाप की। हम आपस में ज़्यों नहीं मिलना चाहते ? ज़्योंकि अलहदगी में हम कुछ और करना चाहते हैं।

चूं नजूलत मी रवंद कार दिगरी कुनद

जिस महापुरुष के आप नाम लेवा हैं उस के नाम को बढ़ाओ। इस का यह मतलब नहीं कि उस का ढोल पीटो, बड़े बड़े मंदिर बनाओ उस के नाम पर। अपना जीवन नमूने का बनाओ। ऐसे दो चार इंसान भी बन गये तो उस की शोभा होगी। कोई भी काम करने से पहले यह सोच लो कि इस काम से गुरु की शान बढ़ती है या कम होती है। सो आज के दिन यही अर्ज़ है मेरी कि भजन सिमरण में वक्त दो, हजूर संभाल करेंगे। पुरानों की तो संभाल होगी ही, नये भाइयों की भी हो रही है और होगी, सिर्फ हमारा मुंह होना चाहिए उस तरफ। हमारा मुंह उस तरफ नहीं। अगर उस तरफ मुंह हो तो दया होगी, ज़रूर होगी, आप को भी ठंडक और शांति होगी और आप के पास जो भी आयेगा उसे भी ठंडक मिलेगी।

****